मक़ासिद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बडा मेहरबान बहुत रहम वाला है।
सब तअरीफे अल्लाह तआला के लिए है। जो सारे जहान क
पालनहार है हम उसी से मदद व माफी चाहते है ।

अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमते व बरकते नाज़िल हो
मुहम्म्द ﷺ पर आप की आल व औलाद पर और असहाब
रज़िअल्लाहो अन्हुम पर।

वह जिसे आग़ से पैदा किया गया। वह जिसने आदम अलैहि. को सज्दा करने से इंकार किया। वह जिस की वजह से मां हव्वा और आदम अलैहि. को जन्नत से निकाला गया। वह जो आदम और औलादे आदम का खुला दुश्मन है वह जो चाहता है कि इंसान जन्नत से दूर हो और जहन्नुम का इंधन बने। वह जिस्की कोशिशे है कि इंसान उसकी टेढी राह को अपनाए और अल्लाह की सीधी राह पर ना चले। वह जो जिसका कहा मान कर इंसान अल्लाह को नाराज़ करता रहे, वो जिसका नाम अज़ाज़ील है। मगर उर्फ आम मे वह “इबलीस” व “शैतान” कहलाता है।

शैतान का बुनियादी मक़सद तो यही एक है कि इंसान को जहन्नम मे धकेल दे और जन्नत से मेहरूम कर दे।इसी एक मक़सद की खातीर उसकी सारी कोशिशे है। जैसा कि इर्शादे बारि तआला है कि

إِنَّ الشَّيْطَٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُو حِزْبَهُۥ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَٰبِ السَّعِيرِ ﴿٦﴾

“वह तो अपने पैरोकरो को अपनी राह पर इसलिए बुला रहा है कि वह जहन्नमियो मे सामिल हो जाए।” (**फातिर- 6**)

इसी बुनियादी मक़सद मे कामयाब होने के लिए वह क्या-क्या करता है? और उसके शर से कैसे बचा जा सकता है।आईये इस परचे वही जानने की कोशिश करते है ।

(1) इंसान को कुफ्र व शिर्क में मुब्तिला करना :-

इसके लिए शैतान इंसान को गैरुल्लाह की इबादत और अल्लाह व उसकी शरीयत से इंकार की दअवत देता है।

كَمَثَلِ الشَّيْطَٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنسَٰنِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيٓءٌ مِّنكَ إِنِّيٓ أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَٰلَمِينَ ﴿١٦﴾

“पहले वह इंसान से कहता है कि कुफ्र कर और जब इंसान कुफ्र कर बैठता है तो वह कहता है कि मै तुझसे अलग हु मेरा तुझसे कोइ तअल्लुक नही।” (**हश्र-16**)

एक दिन रसूल ﷺ ने फरमाया “मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है कि मै तुम्हे वह बात बताउ जिसे तुम नही जानते और वह बात मुझे अल्लाह ने आज ही बतलाई है। वह यह कि अल्लाह ने जो कुछ अपने बन्दे को अता किया, वह उसके लिए हलाल है और

अल्लाह ने सारे इंसानो को ‘दीने हनीफ’ पर पैदा किया था। लेकिन शैतान ने उन्हे अपने दीन से फैर दिया और अल्लाह के साथ ऐसी चीजो को शरीक ठहराया, जिसके लिए अल्लाह ने कोइ दलील नाज़िल नही की। ” (मुस्लिम)

(2) गुनाहो में मुब्तिला करना :-

1. “लोगो सुनो ! शैतान इस बात से क़तई ना उम्मीद हो चुका कि इस शहर मे उसकी इबादत होगी। मगर कुछ आमाल जिन्हे तुम मामूली समझते हो, उनमे इताअत की जाएगी और वह उसी से खुश होगा। ” (इब्ने माजा)

2. “शैतान इस बात से ना उम्मीद है कि जज़ीरा ए अरब मे नमाज़ पढने वाले उसकी इबादत करेगे। लेकिन उन्हे एक दूसरे खिलाफ भडकाने व लडाने में वह ना उम्मीद नही। ” (बुखारी)

जैसे कि इर्शादे बारी तआला है कि-

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَٰنُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَوٰةِ ﴿٩١﴾

1. शैतान चाहता है कि शराब व जुए के ज़रिये तुम्हारे बीच बुगज़ व दुश्मनी डाल दे और तुम्हे अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे। (माइदा- 91)

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوٓءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

2. वह शैतान तुम्हे बे हयाई व बुराई का हुक्म देता है और यह सिखाता है कि तुम अल्लाह के नाम पर वोह बात कहो, जिनका तुम्हे इल्म नही है। (बक़रह-169)

{यानि हर वह काम जो अल्लाह को पसन्द है, शैतान उन्हे ना पसन्द करता है और हर गुनाह व ना फरमानी के काम को जिन्हे अल्लाह पसन्द नही करता, शैतान उन कामो को पसन्द करता है।}

(3) बिदअत में मुलव्वस करना :-

शैतान जब किसी इंसान को कुफ्र व शिर्क और बडे गुनाहो मे मुलव्वस नही कर पाता तो उसे बिदअत पर लगा देता है। जबकि इर्शादे बारी तआला है कि

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ①

"ऐ ईमानवालो! अल्लाह से और उसके रसूल ﷺ से आगे न बढो" (हुजरात-1)

- दीन के नाम पर ईजाद की गई हर नई चीज़ बिदअत है और बिदअत गुमराही है। (मुस्लिम-1471)
- "अल्लाह तआला बिदअती की तौबा कुबूल नही करता, यहां तक कि वह अपनी बिदअत छोड दे। " (तबरानी)
- "अल्लाह तआला बिदअती का कोई अमल कुबूल नही करता, यहां तक कि वह अपनी बिदअत छोड दे।" (इब्ने माज़ा)

(4) इंसान को अल्लाह की इताअत से रोकना :-

नेकी व भलाई के जिस रास्ते पर भी अल्लाह का कोई बन्दा चलना चाहता है। शैतान उसकी राह में रोडे अटकाता है और उसे रोकने की कोशीश करता है। इसलिए कि शैतान से अल्लाह से कहा था

قَالَ فَبِمَآ اَغۡوَيۡتَنِىۡ لَاَقۡعُدَنَّ لَهُمۡ صِرَاطَكَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ ۝١٦ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمۡ مِّنۡۢ بَيۡنِ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمِنۡ خَلۡفِهِمۡ وَعَنۡ اَيۡمَانِهِمۡ وَعَنۡ شَمَآئِلِهِمۡ‌ؕ وَلَا تَجِدُ اَكۡثَرَهُمۡ شٰكِرِيۡنَ ۝١٧

"जिस तरह मैं गुमराही में पडा, मैं भी तेरी सीधी राह पर (तेरे बन्दो को गुमराह करने के लिए) बैठूंगा, फिर इंसानो आगे से, पीछे से, दाएं से, बाएं से गरज़ हर तरफ से घेरुंगा और तू उअनमें से ज़्यादातर को शुक्र गुज़ार न पाएगा। " (आराफ-16,17)

(5) इबादत व इताअत में खराबी पैदा करना :-

एक सहाबी रसूल ﷺ के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि नमाज़ खराब करने के लिए शैतान मेरे और मेरी नमाज़ के बीच हायल हो जाता है। आप ﷺ ने फरमाया " यह शैतान है, जिसे 'खन्ज़ब' कहा जाता है। अगर तुम्हे उसका एहसास हो तो उससे अल्लाह की पनाह मांगो और बाई तरफ तीन दफा थूक दो। " वह सहाबी कहते है कि मैंने ऐसा ही किया तो अल्लाह ने यह चीज़ खत्म कर दी। (मुस्लिम) " जब शैतान अज़ान को सुनता है तो पाद मारता हुआ भागता है, अज़ान खत्म हो जाने पर वह वापिस आ जाता है और वसवसा पैदा करना शुरु कर देता है। फिर अक़ामत की आवाज़ सुनता है तो भाग जाता है, हिर अक़ामत हो जाने पर वापिस आकर वसवसा पैदा करना शुरु कर देता है। " (बुखारी)

" जब अक़ामत खत्म होती है तो शैतान आता है और इंसान और उस्के दिल के बीच हायल हो कर कहता है कि फलां बात याद करो, फलां चीज़ याद करो। यानि उसे वोह बाते याद दिलाता है, जो उसे पहले याद न थी। इस वजह से इंसान को याद नही रहता कि असने कितनी रकअते पढी है। " (मुस्लिम)

(6) जिस्मानी व ज़हनी तौर पर तक्लीफ देना :-

1. पैदाइश के वक़्त :-

रसूल ﷺ फरमाते है " हर बच्चे को जब उसकी माँ जनती है तो शैतान (उस बच्चे को) तक्लीफ पहुंचाता है, मगर मरयम और उसका बेटा (ईसा अलैहि.) इससे महफूज़ रहे। " (सही अल जामेअ सगीर) "जब कोई बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसके दोनो पहलूओ में उंगली चुभोता है, मगर ईसा अलैहि. इससे महफूज़ रहे। " (बुखारी)

मरयम और उनके बेटे (ईसा अलैहि.) के बचे रहने की वजह मरयम की माँ की सच्चे दिल से की गई यह दुआ थी।

أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

" मैं इसे और इसकी आने वाली नस्ल को शैतान मरदूद के फित्ने से तेरी पनाह मे देती हू " (आले इमरान-36)

अम्मार बिन यासिर रज़ि. भी उन लोगो मे से है, जिन्हे अल्लाह ने शैतान के शर से महफूज़ रखा था। जैसा कि हदीस में है कि - अबूदर्दा रज़ि. ने कहा कि क्या तुम मे कोई ऐसा शख्स है जिसको अल्लाह ने अपने नबी ﷺ की दुआ से शैतान से महफूज़ रखा हो? तो मुगीरा रज़ि. ने कहा कि 'हा' वह अम्मार रज़ि. हैं। (बुखारी)

2. घरों में आग लगाना :-

"जब तुम लोग सोने लगो चिरग बुझा दिया करो, क्योकिं शैतान बअज़ हैवानो (चूहों वगैरह) को ऐसी चीज़ो के तरफ लाता है और तुम्हारे घरों मे आग लगा देता है। " (अबू दाऊद)

3. शैतानी ख्वाब :-

"इंसान नींद की हालत में जो ख़्वाब देखता हे, वोह तीन तरह के होते है। - (1) रहमानी यानि अल्लाह की तरफ से (2)

शैतानी- जो इंसान को परेशान व रंजीदा करने के लिए शैतान की तरफ से होता है और (3) नफ्सानी- जिसमें इंसान अपने-आप से बाते करता है। ” (सही अल जामेअ सगीर)

“ अगर कोई शख्स ऐसा ख्वाब देखे जो उसे पसन्द हो तो वह अल्लाह की तरफ से है। उसे चाहिये कि इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और उसे लोगो से बयान करे और अगर कोई बुरा ख्वाब देखे तो वह शितान की तरफ से है। उस शख्स को चाहिये कि अल्लाह की पनाह चाहे और उस ख्वाब को किसी से बयान न करे, क्योकिं उससे कोई नुक्सान नही पहुंचता। ” (बुखारी)

4. मौत के वक़्त इंसान को झिंझोडना :-

नबी ﷺ अपनी मौत वाली बीमारी में शैतान के वसवसे से अल्लाह की पनाह मांगने और यह दुआ करते थे “ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हू गिर कर हलाक होने, इमारत में दबने, पानी में डूबने, आग में जलने से और मौत के वक़्त शैतान के झिंझोडने से और इस बात से भी कि मैं तेरी राह(जिहाद) में पीठ दिखाकर मरूं और इस बात से भी कि किसी जानवर के डसने से मेरी मौत हो। ” (सही अल जामेअ सगीर)

5. प्लेग (ताऊन) की बीमारी का सबब शैतान है :-

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया “मेरी उम्मत का खात्मा मैदाने जिहाद के नैज़ो और ताऊन की बीमारी से होगा, जो जिन्नों के कचौको का नतीजा है। दोनो हालतों में मरने वालों को शहादत का दर्जा नसीब होगा।“ (सही अल जामेअ सगीर) “ताऊन तुम्हारे दुश्मन जिन्नों के कचौके का नतीज़ा है, उसमे तुम्हारे लिए शहादत का दर्जा है।” (मुस्तदरक हाकिम)

6. इंसान की खाने पीने और घर मे शैतान का हिस्सा :-

हुजैफा रज़ि. बयान करते है कि जब हम नबी ﷺ के साथ किसी खाने में शरीफ होते तो उस वक़्त तक अपना हाथ न बढाते, जब तक आप ﷺ खाना शुरु न करते। एक दफा हम आप के साथ खाना खाने में शरीक थे। तभी एक लौंडी तेजी से आई और खाने की तरफ हाथ बढाने लगी आप ﷺ ने उसका हाथ थाम लिया फिर एक देहाती तेज रफ्तार से आया और खाने की तरक हाथ बढाने लगा तो नबी ﷺ ने उसका साथ पकड लिया। फिर आप ﷺ ने फरमाया "खाने के वक्त 'बिस्मिल्लाह' न कहा जाए तो शैतान उस खाने को हलाल समझता है " (मुस्लिम)

"अल्लाह का नाम लेकर दरवाजा बन्द करो तो शैतान बन्द दरवाजा नही खोल सकता। मशकीजे का मुंह बन्द कर दो और उस पर अल्लाह का नाम लो, बर्तन ढांप दो, चिराग बुझा दो और अल्लाह का नाम लो। " (मुस्लिम)

"जब (कोई) आदमी अपने घर में आए और दाखिल होते वक्त और खाना खाते वक्त अल्लाह का नाम ले (बिस्मिल्लाह कहे) तो शैतान (अपनी जुर्रियात से) कहता है इस घर मे तुम्हारे लिए न शाम का खाना है और न रात गुज़ारने की जगह है और अगर कोई घर में घुसते वक्त और खाना खाते वक्त अल्लाह का नाम नही लेता तो शैतान कहता है इस घर मे तुम्हारे लिए रात गुज़ारने की जगह मिल गई और रात का खाना भी " (अबुदाऊद)

7. आसेब ज़दगी :-

इर्शादे बारि तआला है कि

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِىْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ

مِنَ الْمَسِّ(275)

“जो लोग सूद खाते है, उन का हाल उस शख्स का सा होता है, जिसे छूकर शैतान ने बावला कर दिया हो।” (बक़रह-275)

और रसूल ﷺ ने फरमाया

“शैतान इब्ने आदम के जिस्म में खून की तरह दौडता है। ” (बुखारी)

इब्ने तीमियह रह. कहते है “ अइम्मा ए मुस्लिमीनमें सिवाए मुअतज़िला के एक टोले के कोई भी ऐसा नही, जिसने यह कहा हो कि आसेब ज़दा शख्स के जिस्म में शैतान दाखिल नही होता। ” (मजमूआ फतावा)

शैतान के हथ कंडे

शैतान अपने मक़सद मेंकामियाब होने के लिए जो हथकंडे अपनाता है, उनमें से कुछ खास ये है ।

→ बातिल को सजा-संवार कर पैश करता है

→ अल्लाह के अहकाम को बढा या घटा कर पेश करता है

→ आज का काम कल करने पर उकसाता है, सुस्त बनाता है

→ झूटा वादा करता है, झूटी उम्मीदे दिलाता है

→ इंसान के साथ हमदर्दी जाहिर करता है

→ नफ्स पर कब्ज़ा कर लेता है

→ शुकूक व शुबहात में डालता व खौफ दिलाता है

→ शराब, जुए का आदी बनाता व बुत परस्ती कराता है

→ जादूगरी सिखाता व फाल निकालने को अच्छा बताता है

→ औरत व दुनिया की मुहब्बत में अलझाता है

→ गीत-संगीत और बिदअत का आदी बनाता है

→ शरीअत की पाबन्दी में रोडे अटकाता है

शैतान से बचाव के तरीक़े

1. एहतियात:-

हम शैतान के गुमराह करने के तरीक़े को जान चुके है, इसलिए इस बारे में एहतियात से काम ले।

2. क़ुरआन व हदीस पर पाबन्दी से अमल :-

हमें चाहिये कि इल्म व अमली तौर पर क़ुरआन व हदीस की पाबन्दी करे। अल्लाह की तरफ से नाज़िल शुदा अक़ाइद को माने व सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करे, अल्लाह की हराम कर्दा चीज़ो से परहेज़ करे। फरमाने रसूल ﷺ है कि "जब बन्दा सज्दे की आयत की तिलावत करके सज्दा करता है तो शैतान वहा से हट कर रोने लगता है और कहता है कि हाए! नाकामी इब्ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया गया तो उसने सज्दा किया, उसके लिए जन्नत है और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैने नाफरमानी की मेंरे लिए जहन्नम है।" (मुस्लिम)

3. अल्लाह की पनाह मांगे :-

जिस शख्स को अल्लाह की पनाह मिल जाए, शैतान उस तक मही पहुंच सकता इसके लिए दुआ करे कि

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

“ऐ हमारे रब! मुझे शैतानो की छेड-छाड से बचा कर अपनी हिफाज़त में ले ले और मुझे इससे भी बचा कि वोह मेरे करीब आए। ” (मुअमिनून-97,98)

और इस तरह कि

“मैं अल्लाह से ! जो सुनने व जानने वाला है, पनाह मांगता हू शैतान के वसवसे से, उसकी फूंक से और उसके जादू से।” (इब्ने माज़ा, अबूदाऊद)

बैतुलखला में दाखिल होते वक्त दुआ करें कि “ऐ अल्लाह! नापाक शैतानो(जिन्नो) और जिन्नीयो से मैं तेरी पनाह चाहता हू। ” (बुखारी, अबूदाऊद)

गुस्से के वक़्त इस तरह पनाह मांगे कि “ऐ अल्लाह! मैं सरकश शैतानो से तेरी पनाह चाहता हू।” (अबूदाऊद)

“ऐ अल्लाह तेरे सिवाए कोई इबादत के लायक नही। तू हर चीज़ का मालीक व पालनहार है, मैं तेरी पनाह चाहता हू अपने नफ्स की बुराई से, शैतान की शरारत व शिर्क से और इस बात से कि मैं कोई गुनाह करूं। ” (सही अल जामेअ सगीर)

बाल-बच्चो की हिफाज़त के लिए कहे कि “मैं तुम्हे अल्लाह के कामिल कलिमात की पनाह में देता हू, हर शैतान से, ज़हरीले जानवर से और बुरी नज़र से।” (बुखारी)

सबसे बेहतर दुआ जिस के जरिये शैतान से अल्लाह की पनाह मांगी जाए, वोह ‘सूरह फलक’ और ‘सूरह नास’ है। (नसाई,बैहक़ी)

4. ज़िक्रे इलाही में मशग़ूलियत :-

यह वह सबसे बडा हथियार है जो बन्दे को शैतान से निजात दिला सकता है। इब्ने कय्यिम रह. कहते है कि “इंसान अल्लाह के ज़िक्र ज़रिये अपने दुश्मन(शैतान) से महफूज़ रह

सकता है। शैतान गफलत की ही हालत में उस पर हमला करता है ” (अल वाबिल-सफा-60)

5. शैतान की मुखालिफत :-

हारिस बिन कैस रह. कहते है कि “अगर नमाज़ के दौरान शैतान तुम्हारे पास आए और कहे कि तु रियाकारी(दिखवा) कर रहे हो तो तुम नमाज़ को ओर लम्बी कर दो। ” (तलबीसे इब्लीस-सफा-38)

शैतान को जो भी पसन्द हो, उसकी मुखालिफत करे। जैसे - “शैतान बाएं हाथ से खाता है, बाएं हाथ से पीता है और बाएं हाथ से पकडता है, तो हमे चाहिये कि यह सारे काम दाएं हाथ से करे।” (मुस्लिम) इसी तरह फिज़ूल खर्ची से बचे। क्योंकि अल्लाह ने इससे मना किया है और

إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوٓا إِخْوَانَ الشَّيٰطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهِۦ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

“फिज़ूल खर्ची करने वालो को शैतान का भाई कहा है” (इस्रा-27) जल्द बाज़ी करने से बचें- इसलिए कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया “गौर व फिक्र करना रहमानी सिफअत है और जल्द बाज़ी करना शैतान की सिफअत है।” (सही अल जामेअ सगीर)

6. तौबा व इस्तिगफार करे :-

जब शैतान किसी को गुमराह करे तो उसे चाहिये कि फौरन अल्लाह से तौबा व इस्तिगफार करे। इसलिए कि

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

“हकीकत में जो परहेजगार है, उनका हाल तो यह होता है कि कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख्याल उन्हे छू भी जाता है तो फौरन अल्लाह को याद करते है।” (आराफ-201)

जैसा कि आदम अलैहि. के साथ हुआ कि जब उन्होने मना किया गया फल खा लिया तो उन दोनो (आदम व हव्वा) ने दुआ की कि

رَبَّنَا ظَلَمۡنَآ اَنۡفُسَنَا وَاِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ۝٢٣

“ऐ रब! हमने अपने आप पर जुल्म किया। अगर तू हमें माफ करके हम पर रहम न फरमाएंगा तो हम नुक्सान उठाने वालो में से हो जाएंगे।” (आराफ-23)

अल्लाह से दुआ है कि वह हम पर शैतान को हावी होने न दे, हमें उसके शर व फरेब से बचाए, हमारी खताओ से दर गुजर करे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन !